[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3624

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पणिक्कर की कृतियों में रंगों का रसात्मक रूझान

गरिमा गुप्ता
चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
Email: garima.vns.gupta@gmail.com

हम सभी अपने जीवन में रंगों से व्यापक रूप में प्रभावित होते हैं हमारे सुख–दुख, उत्तेजना, विश्राम, उल्लास आदि सभी भावनाओं के उद्दीपन में रंगों का प्रभाव देखा जा सकता है। चित्रकार की भाषा में रंग भावना एवं विचार के संक्षिप्त रूप होते हैं। प्रत्येक चित्रकार द्वारा रंगों को प्रयोग करने की विधि व्यक्तिगत अनुभव और रुचि से प्रभावित होती हैं, चित्र के अर्थसार को व्यक्त करने में चित्रकार रंग की सामर्थ्य का उपयोग अपनी अनुभूत तकनीक से करता है।

इस भौतिक जगत में उस परम् शक्ति ने अनेक वस्तुओं का निर्माण किया है। सम्भवतया जीवन भर उनकी संख्या भी न गिनाई जा सके। विभिन्न प्रकार के पत्थर उनके वर्ण तथा रूप एवं स्पर्श ज्ञान होते हैं। इसी प्रकार लकड़ियों के रेशे–प्रवाह, वर्ण तथा धरातल, फूल–पत्तियों की मृदुता तथा वर्ण का आस्वादन दर्शक को सुखद अनुभूतियाँ प्रदान करता हैं।

पणिक्कर का 40 और 50 के दशक का जो कार्य है वो विश्व के प्रकाश को मूल आश्चर्य के रूप में संगृहित करता है, रंग और रूप जो उन्होंने बहुत ही प्रभावी तरीके से प्रदर्शित किया। 50वां का दशक पणिक्कर के लिए मानव रूप और स्थान की खोज का महत्वपूर्ण काल था। उन्होंने अपना ध्यान मूल रूप से भारतीय परिदृश्य और रंगों को अपने चित्रों में समझने की तरफ केन्द्रित किया। अजंता की कथाओं से उन्हें आदर्श रंग पर अलंकारिक प्रदर्शन को समझने का मौका दिया। इससे उनका ध्यान रंगों कथाओं की तरफ केन्द्रित किया।

एक रंग की भी अपनी शक्ति एवं उर्जा होती है और उसके रखने के ढ़ंग से विभिन्न भाव उत्पन्न होते हैं। दो या अधिक रंग रखने से अभिव्यक्ति परिवर्तित हो जाती है, उनके वर्ण में अन्तर करने से संरचना का बदल जाता हैं–उनमें आकर्षण, निष्कर्षण, सन्तुलन व रंग आदि के नये–नये परिणाम उत्पन्न होते हैं। आन्तरिक भावनाओं को अभिव्यक्ति करने के लिए जिन अनेकों माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें समान्यतः रंगों की संज्ञा प्रदान की जा सकती हैं।

रंग कलाकृति की जटिलता में एक और तत्व जोड़ देता है। रेखा स्वच्छता और गत्यात्मक लय प्रदान करती है और पुंज या ठोस रूप आकार को संकेतिक करती हैं, जिसे 'टोन' पूर्ण स्थानिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इन सब में रंग को जोड़ दिया जाता है और उसकी परिपक्वता को रस से सरोबोर करता है।

रंग कलाकार की अन्तर्मन भावनाओं को प्रेक्षकों तक पहुँचाने का एक माध्यम है। कला का सजावटी पक्ष दर्शक को ऐन्द्रिय आनन्द एवंरस प्रदान करता है। वह उसकी प्रेरणा की उपज होती है। मानव ने कला का सृजन केवल कला के लिए लक्ष्य नहीं बल्कि रंगों के महत्व आकर्षण को उत्प्रेरित करता है।

कलाकृति में अभिरूचियाँ बदलती रहती हैं, और वैसे ही सौन्दर्य दृष्टि भी सदा एक सी नहीं रहती, बदलती जाती है। कला का शब्द 'कोष' सदैव एक ही रहता है–वही रेखाएँ, वही रंग, किन्तु उनके नित्य नए ढ़ंग से किए गए प्रयोग एवं सामंजस्य से पणिक्कर कलाकार नित–नूतन आकर्षण उत्पन्न करते हैं।

आज दिन–प्रतिदिन कला–जगत में होने वाले नए–नए प्रयोग और नयी–नयी 'सौन्दर्य दृष्टि' जिस तेजी से हमारे सामने आ रही हैं। उतनी पहले युगों–युगों में कमी नहीं आयी। जिससे रंगों का रसात्मक रूप परिलक्षित होता है।
व्यवहारिक रूप से रंग का ज्ञान साधारण में विशिष्ट स्थान है और पणिक्कर के लिए वह विशेषतया आवश्यक वस्तु है साधारण सम्वाद और सम्प्रेषण के साधनों में रंगों का महत्वपूर्ण स्थान है।

पणिक्कर सर्वलाभ प्राणों की रक्षा में कार्य करते थे। अतः ललित कला में आकर्षित जोश के कारण अनुभव में वृद्धि हो जाती हैं। चित्र में रंगों से एक ध्वनि होती है जिसको पणिक्कर ने सनसनाहट की आवाज कहा है चित्र के देखने से हम उसके द्वारा दिये गये आनन्द और रस का अनुभव करते हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पणिक्कर की कलाकृति में दो आकृतियों के मध्य ने रंग और रस एक गांठ का कार्य करती है। जो दो रंगों के मध्य में भी उसका वही स्थान है। छाया और प्रकाश, समुद्र और आकाश के मध्य भी रंग की ही विशेषता है।

पणिक्कर ने अपनी कलाकृति ने रंग रेखा की धुँधली पृष्ठभूमि देने का प्रयास किया हैं। पणिक्कर की कलाकृति रंग के सौन्दर्य बोध से सीधा सम्बन्ध होता है रंग और रस कला मानवीय अनुभूति से अनुप्रेरित सजीव सौन्दर्यात्मक सृजन है। उसकी प्रक्रिया और भी अधिक सूक्ष्म तथा अयान्त्रिक है, इसलिए कलाकृति में रंग के द्वारा रस की प्रतिष्ठा हुई। भारतीय दृष्टिकोण से कला एवं रंग यद्यपि रस से भिन्न है, तथापि उसका उद्देश्य भी आनन्द ही हैं। वास्तविक रूप से पणिक्कर की कला वह है जो दर्शक के चित्त को रंग के रसात्मक में लीन कर दे।

पणिक्कर प्रकृति के रंगों की विशेषता है रंगों की सुन्दरता प्रकृति का अधिकाधिक आकर्षक और लावण्यमयी बनाती है, और प्रकृति का स्वरूप ही रंग और रस पर आधारित हैं। कला की रचना की दृष्टि, से देखा जाए तो रंग और रस का महत्व है रंग ही वह शक्ति है जिनके आधार पर कलाकार अपनी नवीन दृष्टि को रूप आकार प्रदान करता हैं, रंग रस मस्तिष्क की रचनात्मक शक्ति हैं।

सन्दर्भ–सूची

1 *Contemporary Indian Sculpture the Madras metaphor, Edited by- Josef James Madras, Oxford University Press, Delhi. 1993*
2 *Manifestation 20th Century Indian Art Editor Kishore Singh, April-June 2011, Delhi.*
3 *A History of Indian Painting the Modern Period Krishna Chaitanya, New Delhi.*
4 *भारतीय सौन्दर्यशास्त्र का तात्विक विवेचन एवं ललित कलाएँ, डॉ0 रामलखन शुक्ल, सन 1978, दिल्ली*
5 *आधुनिक भारतीय कला, ज्योतिष जोशी, दिल्ली 2010, प्रथम संस्करण*
6 *भारतीय चित्रांक, रामकुमार विश्वकर्मा, इलाहाबाद*
7 *भारतीय कला के पदचिन्ह, जगदीशगुप्ता, दिल्ली, 1961*